पाठ - 5 रॉबर्ट नर्सिंग होम में

रिपोर्ताज

लेखक - कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

प्रस्तावना

आपने कभी न कभी किसी अस्पताल या नर्सिंग होम में अवश्य गए होंगे। वहाँ आपने यह ध्यान दिया होगा कि किस तरह कुछ लोग रोगियो तथा पीड़ितों की सेवा करते हैं । ऐसे दृश्य आप में भी दूसरों के लिए कुछ कर पाने की इच्छा जगाते होंगे। अपनों की सेवा तो सभी करते हैं, पर बड़ी बात तो तब है, जब दूसरों के लिए भी कुछ किया जाए। दूसरोँ के लिए कुछ करने की भावना से भरे लोग जाति, क्षेत्र, भाषा, धर्म, लिंग व रंग आदि के बंधन को नहीं मानते। वे तो बस यह मानते हैं कि मनुष्य–मनुष्य में भेद कैसा? मनुष्य तो मनुष्य है, वह और कुछ हो ही नहीं सकता। आइए, इस पाठ के माध्यम से ऐसी ही भावना रखने वाले लोगों के विषय में जानने एवं उनसे प्रेरणा लेने का प्रयास करते हैं ।

सारांश

यह वाक्य 1 सितम्बर 1951 का है कल तक जिनका अतिथि था। आज उनका परिचायक हो गया, क्योंकि मेरी अतिथि अचानक रोग की लपेट में आ गई और उन्हें इंदौर के रॉबर्ट नर्सिंग होम में चिंता से घिर गया। रोग बहुत तेजी से फैला, परिणाम यह हुआ पूरा वातावरण धवल वेश में ढकी हुई एक नारी अचानक कमरे में आ गई है। उनकी उम्र कोई पैंतालीस वर्ष होगी। उनका वर्ण बर्फ के समान सफेद तथा सूर्योदय की रेखाओं की भाँति रंगी हुई किरणों की भाँति लग रहा था। उनका कद लंबा तथा शरीर छरहरा था। उनको देखकर माँ जैसा एहसास हो रहा था। हाँ, वे माँ ही थीः वह नसिग होम की अध्यक्षा मदर टेरेसा थीं उनकी मातृभूमि फ्रांस था और कर्मभूमि भारत! उम्र के इस पड़ाव में रोगियों की सेवा में तल्लीन, यही काम, यही धाम, यही राग और यही चाव उनके जीवन का उद्देश्य था। उसी दरवाजे की आवाज़ आई और हमारा डाक्टर कमरे के भीतर आ गया। मदर ने उसे देखते ही कहा – ''डॉक्टर तुम्हारा बीमार हँस रहा है।'' डाक्टर ने जवाब में कहा हाँ मदर आप तो हँसी बिखेरती हो । मैंने सोचा ऐसी हँसी बिखेरने वाली ही बिना प्रसव किए माँ बन सकती है वही तीस रु मासिक वेतन पर दिन–रात रोगियों की सेवा कर सकती है और वही पीड़ितों के तड़पते जीवन में हँसी बिखेर सकती है। तीसरे पहर का समय था, थर्मामीटर हाथ में लिए वे आई – मदर टेरेसा और उनके साथ एक नवयुवती, उसी विशिष्ट धवल वेश में, गौर और आकर्षक। इससे ज्यादा मैं यह कह सकता हूँ कि शायद चाँदनी को दूध में घोलकर ब्रह्मा ने उसका निर्माण किया हो। उसका नाम क्रिस्ट हैल्ड था और वह जर्मनी से आई थी।

फ्रांस की पुत्री मदर टेरेसा और जर्मनी की दुहिता क्रिस्ट हैल्ड एक साथ–एक रूप, एक ध्येय, एक रस | मैंने कहा–

''तुम्हारा देश महान है, जो युद्ध के देवता हिटलर को भी जन्म दे सकता है और तुम्हारे–जैसी सेवाशील बालिका को भी तो वह चुप हो गई। अपना दाहिना पैर पृथ्वी पर वेग से ठोंककर बोली– यश-यश और वह दूसरे कमरे में चली गई, तो मैंने मदर टेरेसा को टटोला,

''आप इस जमन लड़की के साथ प्यार से रहती हैं? तब वह बोली वह भी ईश्वर के लिए काम करती है और भी, फिर प्यार क्यों न हों ? मैनें कुछ पिन चुभोते हुए कहा– ''पर फ्रांस को हिटलर ने पददलित किया था, यह आप कैसे भूल सकती है? ''चुभन गहरी थी, पर मदर का कलेजा उससे अछूता रहा। बोली ''हिटलर बुरा था, उसने लड़ाई छोड़ी पर उससे उस लड़की का भी घर ढह गया और मेरा भी, हम दोनो एक है। क्रिस्ट हेल्ड के पिता जर्मनी में एक कॉलेज के प्रिसिपल हैं और उसने अभी पाँच वर्षों के लिए ही सेवा का

व्रत लिया है। मैंने उससे पूछा- इतनी दूर अपने माता–पिता से दूर तुम्हें उनकी याद नहीं आती ? तो उसकी आँखे नम हो गई | उसने रूमाल से उन्हें पोंछ लिया फिर मैंने पूछा तुम्हें छोड़ते समय तुम रोई थी। उसने कहा- माँ बहुत रोई थीं। फिर मैं फटी आँखों से उसे देखता रहा, तब कुछ बिस्किट उसे भेंट किए। बोली धन्यवाद, ''थैंक यू, तांगशू।'' वह अक्सर हिन्दी, अंग्रेजी, जर्मन भाषाओं के शब्द मिलाकर बोलती है। हम सब हँस पड़े और वह हँसती-हँसती भाग गई।

मदर बातों के मूड म थी। मैंने उनके हृदय मानस में चोर दरवाजे से झाँका। मैंने कहा- ''मदर घर से आने के बाद आप घर नहीं गई कभी मिलने जुलने भी? ''कान अपना काम कर चुके थ, वाणी को अपना काम करना था, पर मदर ने उसकी राह बदल दी तब मैने सुनी यह कहानी। कई वर्ष बीत गए। फ्रांस में वि"व भर के गृहों का एक सम्मेलन हुआ। भारत की दो मदर भी प्रतिनिधि होकर उस सम्मेलन में गई। वे फ्रांस की ही थी, उनके माता–पिता फ्रांस में ही थे। उन्हें पता था बरसों बाद हमारी पुत्रियाँ आ रही है। दोनो माताएँ अपनी पुत्रियों का स्वागत करने जहाज पर आई। विचित्र बात यह हुई कि वे दोनों अपनी पुत्रियों को पहचान ही न पाई और आपस में कहती रहीं कि तुम्हारी बेटी कौन सी हैं ? अंत में उनका नाम पूछा और गले मिली। कहानी पूरी हुई तो कई प्रश्न उठे, पर मदर टेरेसा उनके उठते न उठते भाग गई। निश्चय ही उन दोनों अनपहचानो पुत्रियों में से एक वे स्वयं थीं।

ऊपर के बरामदे में खड़े मैनें एक जादू की पुड़िया देखी–जीती-जागती जादू की पुड़िया। नर्सिंग होम की सबसे बुजुर्ग मदर मार्गरेट। कद इतना नाटा कि उन्हें गुड़िया कहा जा सकता है। पर उनकी चाल में गजब की चुस्ती, कदम में फुर्ती और व्यवहार में मस्ती, हँसी मोतियों की बोरियों के समान, काम ऐसा की मशीन भी मात खा जाये। भारत में चालीस वर्षों से सेवा दे रही हैं। ऑपरेशन के लिए एक रोगी आया और कहने लगा - मदर मैं मर जाऊँगा। बूढ़ी मदर की हँसी के दीपक ने झपकी तक नहीं खाई। वह बोली, कुछ नहीं कुछ नहीं आज है ऐवरीथिंग –सब कुछ

कल समथिंग – कुछ कुछ

और बस, तब नथिंग– कुछ नहीं

और वे इतने ज़ोर से खिलखिलाकर हँसी कि आस–पास कोई होता, तो झेंप जाता। यह अनुभव कितना चमत्कारी है कि यहाँ जो जितना अधिक बूढ़ी है, वह उतनी ही अधिक उत्फुल्ल, मुस्कानमयी है। सिस्टर हैल्ड का तबादला हो गया है और वह धानी के भील सेवा केन्द्र में काम करेगी। ओह! उस जंगली जीवन में यह कर्पूरिका परन्तु वह अपने कार्य से सन्तुष्ट और खुश हैं। वह हम लोगों से मिलने आइ हँसती, खिलती, बिखरती, और फुदकती। यहाँ से जाने का उसे विषाद नहीं। एक नई जगह देखने का चाव उसके रोम-रोम में पर मुझे उसका जाना कचोट सा रहा था। सिस्टर मदर वर्ग का निस्संग, निलिप्ति निद्र्वंद्व जीवन पूरी तरह मेरे मानस–चक्षुओं में समा गया और फिर कंठ में रखकर धनी हुए, पर तुम उसे जीवन में ले कृतार्थ हुई।

जीवन परिचय

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

जन्मः–

कन्हैयालाल मिश्र जी का जन्म 1906 में हुआ था।

शिक्षाः–

कन्हैयालाल जी की प्रारंभिक शिक्षा सुचारू रूप से नहीं हो पाई थी। उन्होंने स्वाध्याय से ही हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया।

रचनाएँः–

कन्हैयालाल मिश्र जी की प्रमुख **रचनाएँ** इस प्रकार वर्णित है–

1. माटी हो गई सोना
2. धरती के फूल
3. आकाश के तारे
4. जिन्दगी मुस्काएँ
5. भूले–बिसरे चेहरे
6. छण बोले कण **मुस्काएँ**
7. महके **आँगन** चहके द्वार

भाषा शैलीः–

कन्हैयालाल जी की भाषा में व्यग्यात्मकता सरलता, चुटीलापन, की अद्भुत क्षमता है।

साहित्य में स्थानः–

कन्हैयालाल जी भाषा और शैली की अद्वितीयता अर्थात् रोचकता के कारण हिन्दी साहित्य के गद्यकारों में विशिष्ट स्थान रखते **हैं**।